Marwari college, Darbhanga
Hand written lecture
By
Dr. S. K. Suman, Asst Prof, Dept. of Psychology

Page No. 63
Date 19.04.20

For:-
Class - B.A. Part-I, Psychology (Hons), Paper-I
Ch-4, Learning Topic - Role of Motivation in learning.

5. बाह्य एवं आंतरिक पुरस्कार (External and Internal reward):-

मानव शिक्षण के लिए बाह्य पुरस्कार की अपेक्षा आंतरिक पुरस्कार अधिक लाभप्रद है। क्योंकि बाह्य पुरस्कार से कभी-कभी हानि तथा शिक्षण योग्यता में वृद्धि नहीं होती है, पुरस्कार पुरस्कारों का रूप ले लेता है। जब तक पुरस्कार के रूप में कुछ मिलता रहता है तब तक प्रयोज्य सीखता है या किसी क्रिया को जारी रखता है लेकिन आंतरिक पुरस्कार जैसे - उपलब्धि, संतुष्टि, आनंद (Pleasure), interest (अभिरुचि), Happiness, victory, joy आदि में इस प्रकार के हानिकारक प्रभाव नहीं पाये जाते हैं।

De. Charms के अनुसार, बाह्य पुरस्कार व्यक्ति में गिरवी होने का भाव उत्पन्न कर देता है।

Deci ने कालेज छात्रों पर अध्ययन करके देखा, कि बाह्य पुरस्कार की तुलना में आन्तरिक पुरस्कार की स्थिति में छात्रों का शिक्षण बेहतर हो गया।

⑥ दंड द्वारा शिक्षण को नियंत्रित करना (Controlling learning through punishment):-

काफी लंबे समय से बच्चों के शिक्षण में शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वारा अधिगम की प्रक्रिया को

छात्रों पर नियंत्रित करने के लिए दंड का प्रयोग किया जाता था। यह विश्वास काफी दिनों तक प्रचलित रहा कि दंड के बिना बच्चों की शिक्षा पूरी नहीं हो सकती है किन्तु मनोवैज्ञानिकों के प्रयोग से धीरे-धीरे यह मिथ्या विश्वास विलुप्त हो गया और आज दंड पर पुरस्कार की श्रेष्ठता प्रबल हो गई है क्योंकि हम पुरस्कार के परिणामों की अपेक्षा दंड के परिणामों की भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं दंड के कारण कभी-कभी कोई व्यवहार समाप्त होने के बदले चिंता तथा भय का रूप ले लेता है जिसके परिणाम स्वरूप बच्चा में स्थिर बन जाता है।

(7) परिणाम का ज्ञान (Knowledge of result):-

मनोवैज्ञानिकों के प्रयोग से स्पष्ट हो गया कि परिणाम का ज्ञान सीखने में एक प्रमुख अभिप्रेरक का काम करता है परिणाम के ज्ञान से सीखने की कुशलता बढ़ती है। इसकी पुष्टि हेतु ब्रुक एवं मारवल ने एक प्रयोग में पाया कि "सीखने के सुगम अभिप्रेरकों में परिणाम का ज्ञान बहुत महत्व रखता है।" उन्होंने छठी कक्षा के छात्रों के दो समूह लिए एक प्रयोगात्मक समूह तथा दूसरा नियंत्रित समूह। प्रत्येक समूह को एक शिक्षक ने अलग-अलग

10 दिनों तक अध्ययन सामग्री का ~~अध्ययन~~ अभ्यास करवाया गया। के प्रत्येक समूह के परीक्षण परिणामों को उपलब्धियों के आधार पर नोट किया गया। दस दिन के पश्चात पाया गया कि प्रथम समूह की प्रगति द्वितीय समूह की तुलना में बेहतर थी। इसका कारण यह था कि प्रथम समूह को उनकी प्रगति एवं उपलब्धि के बारे में प्रत्येक दिन को बताया जाता रहा जो कि सूचना छात्र के लिए पुनर्निवेशन (Feedback) के रूप में काम करता है। इसमें शिक्षार्थियों को बताया जाता है कि उसके द्वारा की गई अनुक्रिया सही है या गलत। इससे सुधार करने का मौका मिलता है। इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि यदि सीखने वाले को उनकी उपलब्धियों के परिणामों का ज्ञान होता रहे तो सीखने की क्षमता, योग्यता एवं कुशलता में अधिक वृद्धि हो जाती है।

(3) व्यवसायिक लक्ष्य (vocational goal) :-

व्यवसायिक लक्ष्य से तात्पर्य उन लक्ष्य से है जिसे छात्र अपनी पढ़ाई के माध्यम से अर्जित करना चाहता है। शिक्षक छात्रों की योग्यता एवं क्षमता को ध्यान में रखकर एक निश्चित लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हैं जिससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि

पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसी संदर्भ में स्ट्रैंग ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि परिपक्व लक्ष्य (Matured goal) तथा एक निश्चित और प्राप्य लक्ष्य छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शिक्षण स्तर पर अनुकूल प्रभाव डालता है।

(9) सामाजिक अनुमोदन (Social approval):-

बालकों को अपने साथियों, माता-पिता एवं शिक्षकों से मिलनेवाले सामाजिक अनुमोदन भी एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन या अभिप्रेरणा के रूप में काम करता है और अधिगम उससे अधिक प्रभावित होता है। सामाजिक अनुमोदन में प्रशंसा, प्रशंसात्मक टिप्पणी, समूह द्वारा स्वीकृति, पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र आदि सम्मिलित होते हैं। शिक्षक इन सामाजिक अनुमोदित अभिप्रेरक का प्रयोग करके वर्गशिक्षण करते हुए छात्रों का मनोबल बढ़ा सकते हैं, जिससे छात्रों की उपलब्धि अन्य छात्रों की अपेक्षा अधिक होगा जिसको शिक्षकों से अनुमोदन प्राप्त नहीं होता है।

(10) प्रतियोगिता तथा सहयोगिता (Competition and Co-operation):-

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि प्रतियोगिता की परिस्थिति में छात्र अधिक मेहनत और लगन से सीखते हैं। जबकि सहयोगिता की परिस्थिति में इन चीजों में थोड़ी कमी देखी जाती है परंतु इसके बावजूद मनोवैज्ञानिकों ने प्रतियोगिता को वर्ग के शिक्षण में एक प्रोत्साहन के रूप में अधिक प्रयोग करने की सिफारिश इसलिए नहीं की है क्योंकि इससे विशेषकर उन छात्रों में जो असफल हो जाते हैं हीनता का भाव, विद्वेष का भाव, संवेगिक तनाव आदि उत्पन्न हो जाता है जिससे उस पर बुरा प्रभाव पड़ता है परंतु सहयोगिता के साथ ऐसी बात नहीं है। इससे छात्र अधिक कार्योन्मुख (task oriented) हो जाते हैं और उनमें किसी प्रकार की चिंता तथा सांवेगिक तनाव आदि भी नहीं होता जिसके फलस्वरूप छात्रों की अभिरुचि अधिगम में बनी रहती है।

निष्कर्षतः उपर्युक्त महत्वपूर्ण अभिप्रेरकों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि अधिगम में इन अभिप्रेरकों से अभिप्रेरित होकर छात्र अपने शिक्षण में अधिक से अधिक तत्पर होते होकर विभिन्न शैक्षिक स्तर पर उच्च शैक्षिक उपलब्धि हासिल करने में प्रेरणा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है॥